Page No:
Date:

माँग की लोच का अर्थ
(Meaning of Elasticity of Demand)

माँग का नियम (Law of Demand) यह बतलाता है कि किसी वस्तु के मूल्य मे वृद्धि होने से उसकी माँग कम हो जाती है तथा उसके मूल्य मे कमी होने से माँग बढ़ जाती है। इस प्रकार मूल्य मे परिवर्तन होता है लेकिन यद्यपि मूल्य मे परिवर्तन होने से माँग मे परिवर्तन होता है तथापि सभी अवस्थाओ मे माँग मे परिवर्तन एक ही प्रकार का नही होता। कुछ अवस्थाओ मे मूल्य मे होनेवाला थोड़ा परिवर्तन भी माँग को बहुत अधिक प्रभावित कर देता है तो कुछ अवस्थाओ मे मूल्य मे परिवर्तन होने पर भी माँग पर कुछ भी प्रभाव नही पड़ता। उदाहरण के लिए यदि मोबाईल का दाम गिर जाय तो उसकी माँग बढ़ जायेगी लेकिन नमक के मूल्य मे कमी अथवा वृद्धि होने पर भी इसकी माँग मे कोई विशेष अन्तर नही होगा। अतः मूल्य मे परिवर्तन के फलस्वरूप माँग मे कितना परिवर्तन होता है इसे स्पष्ट करने के लिये माँग की लोच (Elasticity of Demand) का सहारा लिया जाता है। माँग का नियम हमे यह बतलाता कि मूल्य मे परिवर्तन होने से माँग कितनी घटेगी अथवा कितनी बढ़ेगी दूसरे शब्दो मे, माँग की लोच की धारणा हमे यह बतलाती है कि मूल्य मे परिवर्तन के फलस्वरूप माँग मे किस गति अथवा दर से परिवर्तन होगा।

विभिन्न अर्थशास्त्रियो ने माँग की लोच की अलग-अलग परिभाषा दी है। माँग की लोच की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित है:-

(1) कैयर्नक्रास (Cairncross) के शब्दो मे " किसी वस्तु की माँग की लोच वह गति या दर है जिस पर मूल्य मे परिवर्तन होने से खरीद की मात्रा मे परिवर्तन होता है।" (The elasticity of demand for a commodity is the rate at which the quantity bought changes as the price changes)

(2) प्रो० बोल्डिंग (Boulding) के अनुसार " किसी वस्तु के मूल्य मे एक प्रतिशत परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग की मात्रा मे जो प्रतिशत परिवर्तन होता है उसे माँग की लोच कहते है।" (The elasticity of demand may be defined as the percentage change in the quantity demanded which would result from one percent change in its price.)

Scanned with CamScanner

(3) प्रो० मेयर्स (A.L. Meyers) के अनुसार "माँग की लोच किसी दी हुई माँग की रेखा पर मूल्य मे होनेवाले परिवर्तन के फलस्वरूप माँग की मात्रा मे सापेक्षिक परिवर्तन की माप है।"
(The elasticity of demand is measure of the relative change in amount purchased in response to a relative change in price on a given demand curve)

(4) बेन्हम (Benham) के अनुसार "माँग की लोच की धारणा का सम्बन्ध मूल्य मे अल्प परिवर्तन का माँग की मात्रा पर पड़नेवाले प्रभाव से है।" (The concept of elasticity relates to the effects of a small change in price upon the amount demanded.)

(5) प्रो० मार्शल (Marshall) के शब्दो मे "बाजार मे माँग की लोच अधिक या कम तब होती है जब मूल्य मे एक निश्चित कमी से माँग की मात्रा मे अधिक या कम वृद्धि होती है तथा मूल्य मे एक निश्चित वृद्धि होने से माँग की मात्रा मे अधिक या कमी होती है।"
(The elasticity or responsiveness of demand in market is great or small according as the amount demanded increase much or little for a given fall in price and diminishes much or little for a rise in price.

(6) श्रीमती रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson) के अनुसार "माँग की लोच किसी मूल्य अथवा उत्पादन पर मूल्य मे अल्प परिवर्तन के फलस्वरूप क्रय की गयी मात्रा के आनुपातिक परिवर्तन को मूल्य के आनुपातिक परिवर्तन से भाग देने पर प्राप्त होता है।"
The elasticity of demand at any price or at any output is the proportional change of amount purchased in response to a small change in price divided by the proportional change of price)

इसप्रकार माँग की लोच की उपर्युक्त परिभाषाएँ दी गई है। लेकिन माँग की मात्रा या आकार मुख्यतः तीन बातो पर निर्भर करती है (i) मूल्य (Price) (ii) आय (income) तथा (iii) सम्बन्धित वस्तुओ का मूल्य (Prices of related goods) अतः इन इन तीन तत्वो से संबंधित तीन प्रकार की माँग की लोच होती है —
(1) मूल्य-लोच (Price Elastcity) (2) आयलोच (income Elastcity)
(3) आड़ी-लोच (cross Elastcity)।